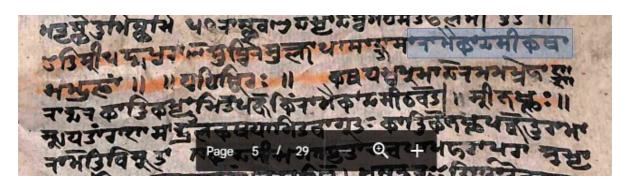
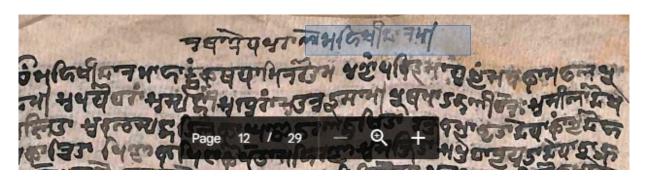
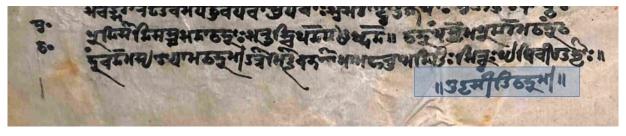
## anantnag manu 3 same.pdf This Manuscript includes,

Ekadashi Kathas (different Masas -Puranas) – Mahishi Daanam – Ashiti Bhadram







इडम् विधिनकनव इहेक्सियक् प्रियंक प्रियंक प्रमान्य मान्य मान्य प्रमान म् उविमारउस् अविश्व अधिरम्भि अभवे प्रमामिवनम् र भाउभ ने भुक्तवी उम्हें युक्ति व्यवस्था अप्रकार स्था विकास वितास विकास व श्लेभीउरीम् हेर्तर इस्मानु इः मक्ठनं उउः सद्यार कुम मयी डवेष्ट 'डेविभन्निए इस्मिक कमी किन अप्यास्कालने कर बा इमाउम्बर्गा अधिनयभगतिया किया विकास रका अव्हानिहा अस्तियू भिन्न यु मूर् के कु हुन वि विष्यंतिष्ठितिक्षितिक्षितिक्षितिक्षितिक्षितिक्षितिक्षितिक्षिति युगर्गाहम् । अल्बिङ्ग्राधीकम् अभगः विद्युष्यः। निया है सब असे भी गाउँ उर भ इयमान वर्गिया वर्गिया वर्गिया वर्गिया दिर्भे र है भूयं इक्की उन गूर मिनरित उन पर इक्कि 1374211 विश्वनिकंश्याधितिधारम्बद्धभाउँ। उद्गान्धारिंग्राम्निवार धीयउ यहे इविधिनगल्मक् उक् उभु उभा स्व : भूगे भादि उः भरहर्मभित्रः तडक्डिफिकेन्यभ्यकाक्ष्रिक फिवः अधिउ गरुष्ट इंदिएगाभद्रिभिग्रेग्भ उद्मिनिधिगएनिधनद्वन्याद्य भक्षकभी गरापित्मश्रवणणभिदिष्यिवंश्रयभी उक्तिगत्र भादां उत्तर्विकिथा थ०ना सुता प्राची स्था भेडि। उर्व में बड़ वेवडु भगान द्रप्ट ड किएन अंड डिसक जमी कहा भाग्न असा हि स्कितितः । कबयश्रमण्डिन हमवस् प्रसम् उध्यक्ति विकास कार मीठवडा । मी कार ।। माना मारे म वहानि भद्रमूपापन मन्भा उज्ञापनि विनेश्व वे के कमी ड्या थामा इसिडिसिए इस स्थायकम्पर् । युद्धन् हि क्निमं अर येउइभान्य। सर् ही इं क्लिप देश जना पर रा CC-6 Public Domain, Digitized by eGangoin

उपअञ्जूनुम्भीर्वातंस्रित्यात्रिक् यहुनेसम्बर्धिः उत्रुप्तम्भ न्स्यिव द्वार भेष्वीभेद्रभभेद्विः नयारिवाक्वयास्य भवपापदाद तिमा पाषिकु वानिआजानियक रापानानिय उत्तिसवा द्वापी विस्तानमानकीत्रका हर्ममान्यातिक्रं यथ्भवार्ष्य हन्त्री न इसंचमलेक्यु या निर्वयं क्रिया विष्टिक प्रमीमिक प्रमान माधिभाना वः नयात्रियात्रनेयांभीधाधेल्हाधिरूकाणा त्रिष्ट वः अत्रेषु हा विविधिक निर्मिक निर्मिक निर्मिक निर्मिक भरा निर्म केंग्रेस्स निम्मंथावनं इति विश्वनिकेश्वविष्ठ व वार्मेश्य कार्ष्य क्रिनेथांडेक्न गमनभी उच्छा भारिक दिन्दि विश्व विभारिभन एए या अविथवस्यानुः धम्प्रकारियक्षा मुझ्मेष्यद्रभाष्ट्रियराज्य यमापनिक एक प्रमुखन्मध्यकल ने इति बेह्र हो भी एक कभी भमेकि। उद्येलकेनिव्हें हर्यन्पियदाग्राप्य मध्रिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रुतभन्नभ्रम्हकमगीराने एकत्व भकल्द भ्रम् हवा वनभू भूमा यिनी नगङ्गनगयागण्य अने कंसीनग्रेष्ट्रामा नग्राधिक गर् क्र ४ ए इपदादिना ग्री एक का ने क्ष सम्बद्ध महाकन्ता न्नायाभन्द्वयालभू अविद्ववयम् एक्षेत्रभाग्न्यत्यामा लस्थेरक प्रियायारमध्रीतिभन्धा वह वहवः म्युक्तिव ह्यानागावित्रकर्नः स्यानः भारति वस् इस्यादिकाति। उस गुरुह्योव्र मेन्य इहु गरेथ् उसमा उपे हु यमा उन नेियमिक्षा निर्मा भारते सम्मे हेव निर्माभेग निर्म चंधाधविनिष्ठे विद्धलेक्शगर्रां क्रिक्शां क्रिक्शां क्रिक्शां स्वाप्त र कंउस' प्रधानः करंत्या क्रियान्ति । यक्ष्यं क्रियान्य विकिन्द्रकान्यान्ये अलेककार्कन्त्र न्यान्यान्या व्रविधियमं वर्षान्यिस्थान् भभोग्रास्थाना वर्षा या । विकार दियाः उदेक्य असी प्रापंत्र के अपि।

मुनु-

कर्रिनेव पष्टानि भेरें अयमया उसम बी दा विधे वर इह जातीरारे गवलियः समुज्ञानवः लेक ५७६वडा व समः किमद्वप्रत जिन्यानिष्या जन्मिल निर्मानिक विषय के नार्क राविषा रेला। अति कि विदेश एक प्रमुद्ध देश या । भाम दुस्या भाषा दे कि भड़े द्वारी प्राप्त प्रमास्त्र ने प्रश्नाम के विकास के वि उतिमीयफार्यसम्बद्धित नियामार्यमान भेक्यमीकवा भग्रहं ॥ ॥ एशितिः ॥ क्षयाप्रभाग्नेनभभेषा रफ्रक् किंडिक किंगि के किंक किंगि कि म्थयंग्राम् म इलक्षयानियत्ग्यः कार्यक्षम् यहारुग्भा न्मितिवर् र एक समीमभाष्ठ्य सत्यापक राध्या नुष्ट प्रमुद्धिगएना क्रिया भारत ना अस्ति । भारत ना विकास पियुग मन्मू भंग्रहित्रुभठवर्थ यभनत्ते मान्त उत्ति भागवा विकास न्य विकास न्य विकास विका

वकः भरमने नक्रवर्धातमा उसेवंग्रभेत्रण्ड क्न उड्डवर्डिए गर्म महागानिका महन्यम् दमीश्रुक्तिनंभभयाउंभुक्ष्यम् भन्तेग्रुष्ट्रम् मन्त्रिक्र पिणित्रचेत्र किंविश्वात्रमाहेवभभव इपि इल ।। क्राणन्ति व भउमव्धित्रम्भनभउभभा थए दशुक्र ३३३४३ १व ३ इप्र एउ ठ उट्ने छ उट्ने छ उत्तर है । इस देश उत्तर है । इस देश है ने इस देश हैं ने इस देश हैं ने इस देश हैं ने इस देश हैं ने इस देश है ने इस देश हैं ने उद्य र्डिमाद्रभावे । इहिर्मेन प्रवास्था । वित्र यो भारति । वित्र यो प्रवास । भवान भीिं उद्यान एया किंक रेभीि मिनुयन प्रक्रवहार यविक वम्हमेठन ॥ वहुक्निक्स ॥ विक्रियम्मनिक न्तर्ने ज्ञाह्मेन सिन् सार्व लक्ष्मिन् प्रिच्च उपना राभनं उद्दारा उन्मेयं दिवसा यादि क द्यमक्तुडडिगद्धभवास्त्रीम इडिमिन्न दुर्क्सभावर्ग्जिम ॥ मे हनेव्या ॥ भद्दभडीर्यक नुष्यं वर्ष्यं ह वर्ष्यं हे चन वाष्ट्रयह्य इस वहविष्ठि भन्नणदर्भे अन्तर्वभूति । भन्नविष्रभू अन्तर्वापन

क्रन-

धंभूष्ण्थात्रुउ उत्रक्षाक्ष्वविद्यमदंभाभा मन्तिविद्रिक्षि त्रस्वित उतिमित्रयार्श्यस्मार्थग्रांगः वेश्ववानेप्नार्थम् विमाप्र विना नस्य ए वर्मेन्य प्रमान्य प श्रुमित्रविष्यायाः विक्रविषयेभूप्रभाष्ट्रवंभक्षपणाः उत्तर्यां उन्युयम् जार्मात्रेयप्तु अस्मिन्व इकल उम्बन्ध वर्ण स्थित या कि क्रिक्षित्वा विक्रिम् अपन्यीष्ट्रिङ उद्यक्त स्मारित्व महत्त्वेणीभिङ अल अक्षरे काभने न जी समें किन क्षेत्रिक रिपितिवर्भ नगरेन मार्थ भीभममितिनाभाव हन पीन सम्वास महत्रपीय उवाकित ध्याविषु एउनः इम्डयर्डिवरुक्तिविष्प्रस्त्रवः उद्यमभ्तर्भ न्नेम्यरियण्लन्स एकिसिनिवर्सप्रचनंत्रक्रमस्तिए ग्वासु भूप रें क्षित्र होते हैं अपनि के अपनि के किया है। अविविद्या अस्पान स्था अस्य अस्पान स्था अस्पान स्था अस्पान स्था अस्पान स्था अस्पान स्था अस्य अस्य स्था अस्य स्य स्था अस्य स्था अस्य स्था अस्य स्था अस्य स्था अस्य स्था अस्य स्थ भुवन् उठवड्ड विकिडें हैं भाग कि प्रीयमें सुमन्क सम्भानिक स्थान Pub. Domain Digit

ब्ह्य उद्याविमेधाः उद्याप्ट श्वभक्ष्यं करंम मुद्रा अपायः मृत उगल्चिकाम्बं वडेडमभी अन्यान्यदरंगेवडिकार्याय क्म भवल्रहेभभयाः मुय्योधिक्भरूएः माउम्मिनोध्रक्र निमार्योठवेत्राः च्रवचतुक्रमद्युक्तयात्रियरभंगतिभ श्रीप मान न र ए दू राष्ट्र हो रहे न मा प्रमानु न यह दि हे न र र मा न स् हः एक दमीर् इत्व भारत्ये निभूम् इ इंडिंभच्या ग्ला है अ उद्यानिक निष्या मित्रया में विकास के वि णभ्यहाभ्रहतं भारे विभागवः ॥ अविम्य समूगले मुक्ष म् उल्यामक भिनीन सेक हमी व्यास गुरू ॥ विना यह क्लां में व मेर्क नित्र है विश्व है अवस्थित कर में मेर्क है में मेर्क है में मेर्क है मेर मेर्क है मेर मेर्क है मेर्क है मेर्क है मेर्क है मेर मेर्क है मेर्क है मेर्क है मेर नग्नियः स्वल धार्मिउथब्कामक प्रमीहरेंग किनामक विणिश्ये अस्य अस्य ॥ स्वाम् ।। स्वाम् श्री विजयं वि

MO

कभल्याभयभागः उष्टा अस्तिभाद्र ल्याराय्य वलंदवि वर्श्याः अरा यम्ब मह्मम् ग्राय परभा क्रवंक नेक्रवं मण्डे भाष्ट्र मान्य य लाउष्टाया में वास्त्र क्षेत्र का सुंग्रेन वाया या में निवस्त्र स्त्र वा यहलं लड्डिम्इलंत्स्प्रणने ग्रेक्चरंग्रेकेस्रहरीया उगगान्त्रक अअण्यान्विनेय उंच्यं क्ष्य द्वार प्रव्यक्ष प्रकार नार्धाः स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्ये स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्थितं स्वाम्यार्ये स्वाम्ये स्वाम्यार्ये स्वाम्यार्ये स लिउन्विचनविचेरगथन्ताः अंभाराक्ष्वभ्याञ्चयभ्याप्तत्वभाग र उधारम् रण्यायक्भलाकिवञ्चक येगयक्रेनर्येश्रम्हप् गर्ग्यावना निगः भरायहल्भभवन्त्रित उद्दलंकभूताव्यक वस ठ्डा मेच्विम्धः रुक्त मेवेथष्ट्रिव रेडेग क्रिविम्बारेश क्भनायाच्य नवक वर्ख्य गिन्ग डाः उभा अन्य य व व उद्योग इमीडिबिः ५ लक्ष्यक्ष्येनाः अल्येष्ठ्रिमा ॥ निर्मा

न्।

4

भथापञ्च प्रमाथवाधान कांस्वतः मडद् राण्ड धमाउच्य मड यहलम्योग्रम् अनुस्ति भिन्तिकं यवस्य विद्वार्ग डबा मक्ड उल्मी परं विश्वः श्री उक्त रेग्म (उल्मी भारत मिंदिन नवः अल्च हुनिभा उद्यन्ध्य स्थान्य निम्यु मक्य मीक्रिन्महे पाउरी प्रकणियः भया उनिरंगि अवस्मित्त्व क कियंक्र अधिक के विषय क्रिक्षण : मस्प्रतीयकंवस्थिश निम्प्रविद्येष अभिक्ष्य युष्ट्याम्भाषान् एउप्रदेशदस्त्रम्भाष्ट्रा भ्वाभिठवम् ४९०५ एउने माउना मडमा चेवकां है कर्न भनामिनी इक्ष्यद्रापदानिष्टेक्षणहरूथदानिली स्रेड्ड्लाइउन उण्यास्त्र विकास महास्ति हा कि का साम पर के में अप क्षयः भग उक्ष्यनं फिली है । उन्नम्हें हर्व विश्व महिन्द व्लभ १३॥ अने के कराया मान भी कर्म मार्थ SE SESSI CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

FAP

यिक्षरः ।। विभवणशाभित्रभूक क क्ष्मक म्मीक वर्ग किंव भक्षि असमजिवारिक उपाक्तिवीर लिभदन सुरश्य उस्ता अस्ति। भानं वैक्षयभूरानाम् ॥ म्रीत्र हः॥ स्टाई क्रिस महाक्षंधाय दर्गथरमा यश्चा भरेलकल्पयहललंका म्यून्यभिड थके भर्माना भना है: अवन्वितियानन सीयरभुर्भिया भग्या मुन् रिक्ल्युंरीभाविकारीश्वे । म्ल्भदीरिल्डिन्स्से म्हायान्य मुक् ध्रदीनश्रकः उद्येतन्यापर्यम् भर्दिनंउषण्याप्रम्भात्त हरें उत्तेव त्रिधिउउसेयं भेषाक्रभक्षिक लिनिन्या एभ्य क् राज्या वेडिया बारिया है स्थाया है उसे सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध । मुख्य सम्बद द्या भागा । योवनंभभ शिवं व क्रुवय भिने ठवें इ किं के निक्ष रिक्स स्थानित सम्मित्र अहल महिकि कि निम् थाउदा मार्थिय सिर्वे प्रकेष स्थापनित । भावरा नि ग्रान्स्भा राष्ट्रिण्यालिय मह्यान्स्भयाग्रीभार्षर्रियो

明.

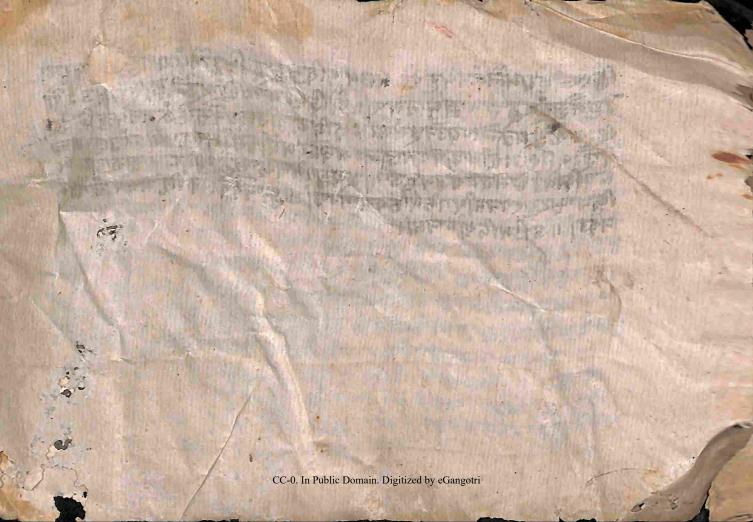
भवनारित्रीवा याजनमा द्रामा प्रापिति एए व उन्हारी सुर्वे युवर्णिस्य क्षानीसद्ध मित्र विक्रिक्ष विक्र स्थानीसद्ध मित्र विक्रिक हरा कर्मा िर्धावीडभे भिष्ट्रभक्तिकिस्। मार्गा यहरू स्वेष्य सुज्भो श्वरान्थ कण्याः अवस्याश्चिषः इक्ष्यं भ्रमेभणीड्ये ॥ इडीस्टर्म जिनमन्त्र प्रविक्त प्रश्नीविन द्वा ॥ अतिक्र इतिया क्रियमिश्यारिका प्रविषय भव्यानिश्य नुभव राष्ट्र मेर्निक्रिया । भीवानं हरू सुभावित प्रायानं वानं वानिति हिंवार्ग भाष्ट्रभथमिक्षियां वर्षे दिवन्त प्रश्ना अप वयानिविष्णासम्बर्ध डमित्रमित्रमितित्वस्मित्रमे मुह्मेलक्ष क्षेत्रभाष्ट्रितम्मा अर्थितः भुक्षणम्म युद्धाः ॥ उत्तिवा उभये इवा उ विश्वान माराधीववी अद्विराष्ट्रीः अभूवानाः भेमस्डेमप्रेवप्राधिनाः सी राजीह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नवाप्यान्न्य भिष्या नमी निमितिर्धा निम्मित्र पर्धा परिमा क्रिक्स क्रिक्स द्रया अथयोग अस्य द्रा अपवेत उत्तर असाल द्रवा अवात इसील देश विस्ता स्वारित्यक लक्षिया भारतिया भारतिया भारतिया । लक्ष्याण म्हार् ने लास्याल विकास । अन्य अन्य किर्मिक परिने नियारान् नियानिक उत्तर्मानिका भिनामभाउत्तरम् विश्वानिक भ्यान होते हैं। यह देन स्थान के विकार के विने वार् भारत कड़ अनुड़ सारामाना कर महाराष्ट्र हमा प्रमान कर के कि क्रिंभिद्धा वस्प प्रकेष युद्ध भुड्कव्य नियन किर्याभिष्ठ ॥क्रिंम चन, श्रुपंत्रनित, मंत्रेष्त्री, श्रुपीयमेनदिश्चानित भन्ने पीर न वर्ग अपन नम्भण दृह्ण भान्य वर्षा हर्षा स्मानिक वर्षा देश हर भारत है। जन्म भारत वर्षा देश हैं। जन्म भारत वर्षा देश हैं। जन्म भारत वर्षा देश हैं। जन्म भारत वर्षा देश है। जन्म भारत वर्षा देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्षा देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्षा देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्य देश हैं। जन्म वर्षा देश हैं। जन्म वर्षा देश हैं। जन्म वर्षा देश हैं। जन्म वर्य देश है भविषये अनुद्वित्र महिज्या तिथा निया निया है। किन् विषये किन भारतान्ति ध्वान हराकि विनीमा अवन्य क्रिया मिली नि अर्था जनमन् गज्यका किन्ने : मुन्द उदा किन देशी भने के का भक्तिविक्तिक तिक्सली नेप्रवेश्वान्त्रभः वराव CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भ्यान् दुउप्पाप, रुप्यु, द्वापड, क्वान्यु, स्राह्यः भरवरभः भवराप्य, पञ्चिरः भागे यसनाये अवेः भनक्य गर्भायनाय नार्ने रानिपनि है अस्पे महन्ने थिए जान्यू वदार्ण्य भट्ये श्वक्य क्वराय कन्नाय भच्छोला दारा कि हर्द्वार नीताप इत्राय भरते क्षेत्रे शक्यराय कीमाय मिर् अर्थेप भारत्य तृङ्ग्य भुजारियंत्रप्० भागिम ननाय क्रमारिष्टे मेरिहे भिष्ठि ब्रियन्भः भ्रध्नमः न्यु प्रमुक्तः स्रवेशभाग्येत्रभः भाग क्षिण्य, सराया प्रिमाया अवव मानिश्र डिमायाः श्राह्मान्य हु, इ सु किन्तिक पत्नानाभरादि। यानास्पानम् प्रिपिक क्षाने महाप्रा प्रिय क्राज्यीङ निवच्या वस्पाय अगम जिथी अपरिवासिक माई विश्वास भूमेशनकं भूष्यभू अंदेश हैं विन्य भू विन्य भू विन्य कि भू विन्य कि विन्य के मान क्ष्रक्षकारिये वा उड्ड एक रहा मध्ये प्रकान कर भने कर भुदि अवश्रमान्नकः। यहरा राइलाइड्सिन्ड्सेमयः सावित्रा क्षिणां ह्याक्षीकिक किल्ला किल्ला है। इस्ति है किल्ला किल्ला CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्चिष्यिद्यम्भिक्निथाति स्वाप्यितिकृति स्वाप्यितिकृति स्वाप्यितिकृति स्वाप्यितिकृति स्वाप्यः स्वाप्ये श्विष्ठ प्राप्तिकृति स्वाप्यः स्वाप्ये प्राप्तिकृति स्वाप्यः स्वाप्ये प्राप्तिकृति स्वाप्यः स्वाप्ये प्राप्तिकृति स्वाप्यः स्वापः स्वाप्यः स्वापः स्वापः



विद्युत्माष्ट्रभाष्य उत्मावयाची राउत्भारभाउत्भी उत्भी एउ प्रवास का व्याप प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्रापत प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त यन्भेटिविष्ट्रान्भञ्जास्त्रम् स्राप्तिभागम् । विक्रान्तिमः मुन्यसम्इण्यम्भंद्र॥ जिङ्गांद्रहातिधुन्त्रमञ्जूनः सम्दर्भा नयद्व च्येष्ट्रकः, रभेगग्यरीरिष्क्रसग्जीवभञ्जकः, रभः श्रीवष्ट्रचिष्ठं कः, रभन्ते द्रिषचि शिच्यक्तिः, रभः थि उत्पृद्रः भेरे नथ छ कः, रभः भूति भवनज भूमाउँ लीका दुर्गाह, भी यलोक हिं उन्हार विष् इतारकः ॥ विश्वकृत्यामा श्रीत्वस्त्रान्य । उथ्राम्बिक विलयं देश्विन विक्रम् क्रिक्स 

रर्भर्थाकाथाका कर् अधिरः भूषसः भूनी उपे कर्ण स्नेभकी बिश्चितः॥ ॥ डर्निमाः भूवै प्रवाः मडिये विद्यावाभनवञ्च हुन्ति थाः द्यामण् शिव्यः अरम्बासे वस्त्र राभ स्वति स्वापा भारति रूःभविवनीकिताक्णभाउये इ ६४यः थिउवे गण्युयः उन्कृति क्षिमःभूपत्वेष्ठर्गहण्यास्मान्याः॥ ष्ट्राच्यास्म इउम्हर्मिवायम् उम्नायक्षे इक्त्रावः भग्रेपवयेश्ये विदर्गे धारमडीर्सिथर्यः॥ हेर्निभाभागित्सप्रेटबर्ने हरू सम्बाल्यो यक्षितः उद्भवरानिमवादिविक्व उद्भवन प्रह्राः भाउतिहारि॥ भवद्गानग्रवस्योद्वयेवण्डयवाः भुभगण्युक्तभाः भुक्तद्वाकृषुः श्राप्तमान्नभग्रहरूक्षत्र निर्माण्या । इत्यान्तमान्त्र प्वदेशका ज्यामक्रमा उत्ति बहुन्न अव्यक्त आहेती । श्रिवः विविधित्र । ॥उद्योडिड्म ॥

जिंदिनि में किस् जीवर ज्या गीरिक वा धी मही भारिती महिला है द्विन्देवीवः॥ विन्द्रिविविवभागाः भद्राण्ये। प्रक्षिये। भण्डामा । ५६ सूत्री सथक्रिय ४५०० री अख्य न्यां पी भे भर्पी हुये ॥ भर्प द्याधिवीमद्रभयम्हेभितिकारम् विष्णु मेहिन्। इयो दह्य यिश्विक्तिकिक्षिशिष्टः भह्य अस्तिभये अरे क्षित्रे क्षेत्रे वित्र भाषितिके भरीयचुर्ताः महाभाष्टी ॥ चर्रेम्द्रान्य वर्ते गर्भे विष्र चित्र है । भभुक्तभाष्ट्रशा प्रदेशिक चित्रप्रभाष्ट्रण नि किल्या विषयमित्र मिला जिल्हा पुडिएक्त निप्त प्रमान विष्ठ के म व्यथ्य विश्व अपिषान्त्र मान्य प्रश्निक भाषा अभिनेत्र भाषा अभिनेत्य भाषा अभिनेत्र भाषा अभिनेत क्रमान्य अञ्चित्र व शिवीव मन्य उत्तर इक्रियमिष एके एग देन सः भित्र विश्वहरम्बम्म ॥ अविविद्युक्त्म ॥ विष्ठह्वः भ्रः॥ ३॥ व्येर एक उपाद्धरा ॥ CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

्रवाः अभितः अधाविष्यवराः आभ्रतभागु भृतिभ्रतिकः अभितेको जन्तिहरूणो क्रिवेदण्यभ्रम् क्रियेद्या सम्पर्धा मार्थिया सम्पर्धा मार्थिया सम्पर्धा सम्पर्धा मार्थिया सम्पर्धा समार्था सम्पर्धा समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्धा समार्था समार्था समार्था समार्था समार्या समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्या समार्या समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्था समार्या समार्या समार्या समार्था समार्था समार्या कि इन्देशक्यायं अस्तिवाद्ः मनुभाष्ठवद्याष्ट्रिष्ठाप्रधारेषव भाउयः भ्रमाङ्गिकाः भावश्रात्रभावश्रात्रभावश्राम् ॥ ॥ विस्त्रीभित्रः स वक्षा श्री दव इस् मने इम्रेजिक्षित में विश्व गर्रामः रमेश्र न र्भवण्यत रमस्वण्य रमवश्रहणद्भा र स्मवश्रहण्या वाद्वज्ञारंमातिः मानिः भानिः भद्रत् च्रवो अक्तिक्त अभ्वतिहरू उक्ति जिस् प्रिया प्रणि प्रभाविश्विष्य के मानिः मानिः भानिः उरिअवामार्विः॥ ॥ १० मजिभिक्रः संवक्षणः सर्वे प्रसुद्भा अव उनुवापित्र महिल्यु परतामः रभेव्यु ल रभेवण्यव रभस्वण्येशम वश्चां क्रामि इसे न भू हण हु क्राचे प्रधान प्रभावा कि से सहभवा क्षांत्रक्रमाबीअभूजाय अपवीक्ष्यां अपविक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपवीक्षयं अपविक्षयं अपविक्षयं अपविक्षयं अपविक्षयं अपवीक्षयं अपविक्षयं अपविक्ययं अपविक्षयं अपविक्षयं अपविक्षयं अपविक्षयं अपविक्ययं अप भ न्या नुव। उसकरे के राज्य भद्र शहर का वाल के उत्ता नुक पूर्वी के राज्य भ

(व्यक्तापक निकान किएक प्रमान के विकास के किए प्रमान भू भेजकुर्वे करिए लागियः अयं इतः भारत् कर्म द्यान्यस्म भूम विणया एक इमेर इनिक्षितिसे यह मुन्न देश असे एक एक एक हुनाव्यक्ष कर गलेन मार्क करने ज्ञान विद्यान विद्या न्यास्त्र स्वत्र स्वात्र क्ष्या क्ष्य भार्था मेरे वस्त्र ति के वस्त्र मार्थित है। कि कार्या के कि वस्त्र के वस्त के वस्त्र के वस्त के वस्त्र के वस्त्र के वस्त्र के वस्त्र के वस्त्र के वस्त्र के उत्रेच के अल् । चार्य मान्य के सम्बाद्य स्मा र्कार अपनिक्रमण्य विकासना निकास कार्या भवामया मास्यापा कार्या विकास कार्या मास्य कार्या भव के नाम के बीश्राक्ष्य उड्डियक्षण्यक्षेत्रक्ष्यक्ष्य प्रमान प्युच्वसम्बद्धप्य विग्रःभवरमाद्र एक्स्यम्बद्धः प्रमान्य विग्र

400

्रवाः अभितः अधारि इविष्टः आभित्भा कृषिति अभित्। कर्तिक्रणा क्रिवेश्य अमुक्लयेक्डरमर्ने श्रुविश्व माउण्यस्य क्टउयः भ्रमाङ्गिकः भवश्रविभावद्येतसम्बन्धाः ॥ ।। विसर्विभिवः सं वहन्त्रः भने हत्र हम् भने उने शहरा ने विभू गर्दा र रे रे न्त रंभवायव रमभुवाय रमवश्रहणद्रक र स्मिवश्रहणद्रक्षण अनाभ एउंचि महेंच महेंच मिर्मु भे उन्न भव । उन्न न अस्व इचि । अस्य वास्वतारंमातिः मातिः मातिः भद्रता प्रबोध सहते कृत्त सहवीह्र रक्कें निश्च अणिं मुख्यन्विश्व भन्ति भन्तिः भन्तिः उरिध्यामार्विः॥ ॥ गणमत्रिक्षत्रभावम्णःभन्ते प्रमुद्भाभन उ यु मृतियु महिल्य मन्त्रमः स्थे बुद्धान्त समेवण्यव रमस्वण्यहार वश्रक्षं इक्तिम इमेन इ हणहरू वेन्य सभाउभवन कि संभरभवा कार्याची उन्न जार अवस्थित वी स्थानी भ्रता के मानिः मानिः मानिः मानिः भ करा नव । उसकरे के नज्ञ सक महिद्धाना विका का निय प्राणि न नुमा

विः। निस्मित्यम्पराभर्षाः भष्टाचमारा । अधिमान प्रमान । इथान ता भेडि है जिस्से हैं से अपने हैं जिसे हैं जा है अक्टानाना अधिक किया । कर ने इतिमन्त्र मान्यनः भूष्णप्या वसवस्थात्मन न्त्र भनुलक्षायाम् भेजीक्ष्याध्वादव्यम् अस्य क्रिया किंगान्यक जीमारमाउप्यक्षित्रम् जिल्ला

एउल्मिस्रियं में प्रमानिक्ष के कार्य के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्थ के मार्य के मान्याण्डम्। क्षाम्य विष्णः भन्ना व्याप्ति स्थाप्ति विष्णे मुभित्रामेने प्रकृतिका मार्गित्र प्रतिक के विविधित्र के विविधित्य के विविधित्र के विधित्र के विविधित्र के विविधित्र के विविधित्र के विविधित्र के विध चवं दें वी , उवद्भेषे वजनिसम् यए। अन्दे हैं बी सु । वर्षे अन्वधी सु नुवद्भे लेख म्बेक्रमन्त्रकः उ । व द्वाराष्ट्रमभूभवद्भमे भ्याउन्नमभूभवद्भमे र उन्नम्थ्र गन्न मन्त्र मन्त्र भन्न प्रमानिक प्र म्मार्यम् म्थारम् भारम्भारम् अधिग्राम् भारम् भारम् श्चमग्राप्ति देश प्रमान्य स्मान्य समान्य स्मान्य समान्य समा मद्रमन्द्रम्भ स्तिमभुम्तिक्सथर्द्रियमभूमीर्गाभूमा प्रमान्य प्रमान ुिं भूको वर्षः क्रारम् मार्ड है मम कि विपर्यम् मार्ड में महामार्थिक मार्थि महि वं अविभव्यम्बद्धाम्म्यक् श्वामम्बद्धान्यम् । प्रश्नाम्म्यम् व कार्मिय द्वारी उपमार्थ म्झ्र में वमझ्मिशिश्च में ज्ञ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

का मिल्यामियामहाप्राप्त अवश्व के उपाद करें हेर्ना अवस्था सम्प्रमान के मान प्रीहित्य स्वास अस्ति अस्ति । विक्री क्षेत्र स्वास में । विक्री क्षेत्र स्व वृश्चित्रकार्त्व अस्ति अस्ति अस्ति । भभाग्व अस्मालपूरापामण्यम् । इस म्रथ्यं वर्ष 53:भागः भागामा इसिमा अधिका अधारिता अस्य केरिया लियेवुक हिम्द्राम्न हिन्त्नः स्मानिकावि स्राप्तिकावित्र वद इ पक्ट अयक्द्रः अपमण्यः इः व्यक्तिम् इ अयुम्पा इ अयुम्पा त्यां विश्वष्ट अवं अविद्युक्त व ॥ एक्स्मेर डिब्स सर्व इस्ट्रिक क्राइन क्रम्यू विकास सम्मार क्रिक्ट कार्य के विकास मिनि इत्यादमा अस्त । उभाव प्रमास्त भार प्रयुक्त वीयाना मार्के प्रविष भूबंगर १ समिन ने अस्मित स्थानिक विस्ति में इक्टिन वर्रिश्मा भूभ प्रवास्था अभागाना हर्रा में न कर्ष परास्था उनिह गणकी भागति । अपना के विक्रण के ये वर्ष मुख्य मुख् श्रमाभववायम्बमाभग्रमाप्टरन्त्रहरूर्वित्रमार्थः अद्भद्रमार्थः

वलान्स्यः द्विरः भ्वीरः भक्षान्यः निम्न विश्व भनिक्षित्र विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विश्व विष्य व इस्रियुन्यस्थान्युमेष्यमः इस्रेय्ण्यः चन्त्रीत्य्स्थियुभाषः यभत्रभद्भवस्था । चिरिन्निम्निम्मस्मानिस्येवीरःभत्रभ रुवितः म्यूवनः अउनाम प्रविद्या क्रिया प्रवित्र ॥ प्रमा भारतिक किस्पितिक विश्वास्थानिक क्रिया किस्पितिक विश्वास्थानिक विश्वस्थानिक विश्वस्य स्थानिक विश्वस्थानिक विश्वस्य स्थासिक विश्वस्थानिक विश्वस्य स्थासिक विश्वस्थानिक विश्वस्य स्थासिक विश्वस्य स्थासिक विश्वस्य स्था रात्यवीनं मन्डेयद्रभष्ट ॥ इद्वस्य भ्रेवनन्ध्राष्ट्रस्य भ्र भड़ेमची ग्रम भक्तमाह्वन मुवानाही भे प्रवान माया ग्रम्भा । चभाकित्रिभेभेडिश्वा व्यापक्षा देवा विकास अग्रहन दुम्प नम्य प्रवाह होडा ॥ अर्टि अस्मित्र स्थित 

द्राहित मधीवनी प्रवास प्रमान प्रमान प्रमान के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के न विकारिक विकास मिनिकाण्डमारि अन्तु अन्ति व रिएका अवन्य ने भिष्ठ पार्टि में हुत्वर सार्य अक्र मुधिकरें वयेष्ट्रम्य विष्या इया धुन इन्वया न उन्न व्या र्वार्क्ष इंश्रामप्रयम् अन्तर्ययक्षेत्र व्यक्तित्व विकास क्षान्य विश्वता विश्वत विक्रान्त्र स्थापः भागनवज्ञप्रमेन् जीः भागेर स्थायः भागनवज्ञ संस्टिक् अध्यक्ति मुम्बिन्दिस्ति स्ट्रिस्ट्रिं क्षां महार्थने विश्व के स्वयं विस्तृ कार्याक्षां राष्ट्रियम् स्त्रात्मा स् वन मुह्ति नार्क्ष कर पर्वस्त प्रमुख्या । भाग पर्वा विश्व कर पर्वा कर परवा कर पर्वा कर परवा कर पर अद्यान्ते वार्षात्रात्रात्र वार्षात्र वार्षात् CC-0. In Public Domains Digitized by eGangotri